७७॥ लूट्यः प्रियः योक्य प्रस्ते योक्षः उर्जे ्य श्रुद्ध स्ट्रा स्ट्रा ।

शचउर्द्र्य.चोध्य.जात्तय.तर्जु.ताचा.क। अधेषा.ब्रीजाक्चिताकूच्यात.क्वी.त्र्र्ट्याव.क्वी.त्र्याचेनाक्चिताच्ची.वा

#### 美生世美之

🕴 व्यॉचकेरिक्रीकराल्याचीवरक्रीर्यराज्यस्यावेविकृत्वराय्येन्परिकेकार्वेस्यर् व्याकामा अयाज्य व्याविकृत्यात्राक्षकेर्याचाराज्यात्री विक्राचित्रा

मुभावपावना नी न्यर अर्ह्य अध्व क्षे व्योभावण्य मुभाविन व्योभाविन क्षुय क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र निर्वाणया ने दे ५ उर वाभावावन के प्रविवाणीया

म्रिमालमञ्जानम् नरम्पार वर्षे द्वमालक्ष्यमान्त्रेणसम् नेत्रमाने द्वी व्यालम् वर्षे क्षिर वर्षा वर्षे मार्थित सम्मानिक क्षिरमालक्ष्यमान्त्रम् केर्ने क्षिरमाने सम्माने

### चीर्या अंचीया उद्गुल्लेन जा गुर्ट ने का कूचीया कुर्य वया विचानस्रीचीया दी सैन्।

चुश्चम् हृद्धा क्रिस्टा क्रिस्टा क्रिस्टा प्रत्यात्रकृतिक स्वाप्त क्रिक्ट क्रिस्टा क्रिक्ट क्रिस्टा क्रिक्ट क्रिस्टा क्रिक्ट क्रिस्टा क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्

#### देव:क्व:दर:धे।

### र्देब क्वं मानेशन।

### र्ट्व.क्वं.चश्चमः।

भ्रेव् र र म्यूवा वक्ष्य दर्भा पर द्वार व्यक्तिया अवय्वदे भ्राप्त वक्ष्य क्षेत्र वह विश्व स्थिता

#### र्देब:क्वंच:पवे:पा

श्रिलवि स्टाइस्माल्या स्टा चर्याल्या वि समूजन स्टा क्रूमाल्या स्टाचय माल्या श्रिक्ट स्टाव माल्या श्रिक्ट स्टाव माल्या स्टाच साल्या सालया साल्या सालया साल्या साल्या

#### र्ट्य.क्व.ज्ञा

श्री ती पुरा स्वाप्त मार्केट मार्केट मार्केट हो मुक्त हो के बिल स्वाप्त मार्चिस स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त

#### र्ट्व.क्व.ईबा.ता

भुे में में मे मेम विभाग की अनुत्र भागान एम् विना हुएन एमें मिश्री विना भाम भाग मिश्री के प्रमेश मिश्री के प्रम

#### र्ट्व.क्वं.नर्वे.न

#### र्देव:र्क्व:पक्त5:५।

# र्देव:व्ह्व:दशुप्प

मिल्यामान्यर्य-विमान्त्रिया पूर्वा नविरादर्। ह्रामा सार्वा क्षेत्र उत्तर विरायनमानु कार्य सम्बन्धि क्रिया क्षेत्र

#### र्देव:क्वंप्परु:प

लूटी। भ्रित्यु-इन्टरम्टरम्बन्नरम् क्ष्रीनक्ष्रमञ्जूक्षमणाम् जुर्वावश्यमार जनावविश्चिमान्वभिक्ष ज्वाभन्नेमभ्रित्या न्दन्ति । नामभ्रम्भावा वार्ष्ट्विमभ्रम्भावा वार्ष्ट्विमभ्रम्भावा वार्ष्ट्विभ्रम्भाव वार्ष्ट्विमभ्रम्भाव वार्ष्ट्विमभ्रम्भाव वार्ष्ट्विमभ्रम्भाव वार्ष्ट्विमभ्रम्भाव वार्ष्ट्विमभ्रम्भाव वार्ष्ट्विमभ्रम्भाव वार्ष्ट्विमभ्रम्भाव वार्ष्ट्विमभ्रम्भाव वार्ष्ट्विमभ्रम्भाव वार्ष्ट्विमभ्रम्भ

#### र्द्रव:क्वं:परु:माठेमा:पा

भुं त्रं इत्राच्या त्यामकेन भुंब पर्वेचन द्वान ज्वान वा वार्य तार्या भ्रेम हो त्याव ज्वार त्वंचानून वाचान होयम वित्र व्याप व्याप वित्र व्याप व्याप वित्र व्याप वित्र व्याप व्याप वित्र वित्र व्याप वित्र वित्

स्तुध्य । देउनुआनुमार त्यान नु विस्तु मान्य सम्मान्य सम्

### र्देब:क्वंच:परु:पाठेश:पा

स्त्रिम् स्तर्ता। स्त्रिम् स्तर्ति वरक्त। त्रक्त। त्रक्त। त्रक्त। त्रक्ता त्रिम् विभावस्थाने स्वाधिमायस्थाने स्वाधिमायस्यस्य स्वाधिमायस्यस्य स्वाधिमायस्यस्य स्वाधिमायस्यस्य स्वाधिमायस्य

#### र्देव:र्क्व:पठ:माश्रम:प

भ्रे म् र र र मिरायत मृत्यूत् मात्राक्तमा वटा मृत्या श्री उत्तीयमा उत्तीय विट ता तटा। वावमा सूर्य क्षेत्र क्षेत

भ्रेचे रेरे रेर र स्थाने प्रमासित पर वर्षिया वर्षिया वर्षिय विद्या प्रमासित वर्षिय विद्या वर्षिया वर्षिया वर्षिया

#### र्ट्व.क्व.न्यु.न

भुँ मुर्-रू-र-र-कुर-वार्युर-उष्कुलमानून पुर-भैगावनवाश्वर् रचा ब्री-भर राष्ट्रमा शुभिनमा उष्कून कु उष्कून राज्य शुर्वेर एउ सूच सर लूटी

### र्देब.क्ब.नर्रु.कं.ना

भ्रे च्रां मेर मेर मियायय ह्या व्यत् द्वां व्यत् व्यत्

श्वानः बीभावानः विवादी क्षियानवर्षेत्रावनः सर्वन्तेन विभावर्षेत्रायः स्ता । यस्य देवे क्षियानवन्त्रे चक्षु स्व

# र्देव:र्क्व:परु:दुमाःपा

भ्रेत्रत्र्यं क्र्यंत्रम्भागत्रत्वाभर्णस्य भ्राप्ता क्र्याप्ता क्राप्ता क्र

202.0021

त्वरश्चा मान्नेश गाया महत्त्र प्रमाणका येव क क्रियु होत् पार्मे वर्षे क्रिया कर या कुमा मुर्मेश पार्यीया

र्ट्व.क्व.परु.परुव.पा

श्रणीय् सरः सरः मी अपन्य स्तरः हिप्पेर् सरः क्षेत्रावर मुरः ब्रथा चर्ता याक्षेत्र छेत् सः स्ता याक्ष्य स्ता सर

श्र.चार-चील-चार-खुचा ची अपमर-देचर-चर्ख-टर्लूबा चुन्द-पद्मुचाला औ र्कुबा ।

र्देव क्व पर्रे प्रमुद्धा

अमाश्चिता कुर्याश्चित्। कुर्यानुमाश्चरणस्त् नावमाञ्च कुर्यान्द्रमान्द्रम् द्वात्त्रमा सम्बन्धः स्त्रामाण्याः स्त्रीयामाण्याः द्वात्त्रम् स्त्रामाण्याः स्त्रीयामाण्याः स्त्रीयामाण्यामाण्यामाण्यामाण्याः स्त्रीयामाण्य

र्देब:र्क्ब:परु:प्रशाप)

व्यस्तरकाश्चित्रहर्मा नामा द्वित्रहर्मा नामा द्वित्रहर्मा नामा द्वित्रहर्मा व्यस्ति । व्यस्तर्भेत्रमा व्यस्तिव वित्रे से स्वराजनीय नामा वित्रमा नामा वित्रमा नामा वित्रमा वित्रमा

र्देब:क्बंके:न्युपा

क्ट अर मधिभवि कु मधिव कु मधिव कु मुंच परि रहूँ मा कुर पर देन मुंच हुन भर देन मा कुर पर देन मा कुर पर देन मा कु

शुः भव प्यान भीतः भूता मार्डमा मुं शुः स्तु मारा स्थाय वा मुंची प्राप्त मार्थि मार्थ मार्थि मार्थ मार्थि मार्थ मार्थि मार्थ मार्थि मार्थि मार्थि मार्थि मार्थ मार्थ

र्देव:क्वंत्रेत्र:याठियाःपा

र्क्ट्र अर उत्तर केन व्यवन् गार राजा व्यव उत्तर न्तर निवस्त्रीय व्यवस्त्रीय व्यवस्त्रीय व्यवस्त्रीय व्यवस्त्री

र्क्ट्यर स्ट मी सुभाशुर ब्रद दु श्री स्ट भावत्या यदेवाया लु चरे वेच व्रद यद्या भुस दु स्थित्।

श्री अपने प्रतिस्थित में तिन्द करे में बिहर में तिन स्थाप में बिहर में के स्थाप में स्

र्देव:क्वंत:क्रेन:माठ्ठेश:पा

त्तीनानुमार्बेद प्रमानोभा मान्यान्त स्वात्त क्षात्र क्षात्

ह्य.क्ष्य.ध्रन्न.चाश्रभात

श्चिम में में माना में मान के मान

क्टन्सर-द्रो उदोर्-बार-जर मेर्ट रादु क्रें ब्राजना रूच उर्द सर्वर लामा सूचान उर्द संभेश र्वाम् लाहु सूचा सर जूरी

शानुन स्ट-स्ट मी प्राप्त श्रीर श्रीन कर्न कुट मैं जम्मे अकूता वर्षा मान्य । कुट मैं अकूता वर्षा प्राप्त श्रीन विवास क्री।

र्द्व-क्वन्त्रेर-पत्निया

बालुव सराज्या मार्च देश के हुर जियान तर अधिव खुरा दिन स्थान अपूर्य साम्यान अव की त्यार नाम अपूर्य तमान्य की मार तरा के देश पर हुर पर हुर साम स्थान

र्ट्व.क्व.भेर.कंत

लूरी शलुव सिन्दर्भ प्रदेश मान्य प्रतिकालक के मान्य के मान्य

व्यस्ति । विस्ता म्याविक्षेत्रकरण त्रात्रीयो वात्रका क्षेत्रहेत्य प्रत्री म्याव्यक्ष प्रत्ये विष्य क्षेत्र क्षेत्र

र्ट्व.क्व.धेन.दैवाना

क्षेत्रहरूरेन्य पूर्व मृत्या क्षेत्र के स्वाप्त के स्व

त्त्र क्षेत्रकाष्ट्रेनीय हेत् अन्तर्भाव क्षेत्र में विकास का महत्त्र क्षेत्र क्षेत

तः अक्टूबरम् ची सिवा बनावा अपवार कुरा जून हिंद बाद उट कुवा हुंद द्वाव उट्टे उद्देशक हिंद तद बाहू हुतू हुट हद दे जूटी।

र्ट्व.क्व.भ्रेन.नर्टव.ता

र्देव:क्वंत:क्रेत्र:पक्कंद:पा

भ्रे म्ह्रेन्द्रम्याकरायभ्रमाक वर्षे वरह्मान् के भ्रेन्य वरत्ता महत्त्वराजना व्यवस्था भ्रम्भावत्त्र भ्रम्भावत् भ्रम्भावत् भ्रम्भावत् भ्रम्भावत् भ्रम्भावत् भ्रम्भावत् भ्रम्भावत् भ्रम्भावत्त्र भ्रम्भावत् भ्रम्भ

र्देव:क्वंकेर:दशुःध

क्षेत्रेत्रेत्रवाहेर्द्धनावाहीत्रवादनात्रवाहरूप्याचित्रो। देविवदिवर दुन्दनी नान्वेवाहेर्द्धनार वादवादनी नामेन व्यक्ति

सुमा अनामा बुद्धम्न विम्न केराना में पर्तना में मारी हुन्न प्रमान प्रमान केरान मारी केरा मारी केरान मारी केरान मारी केरान मारी केरान मारी केरान मारी केरा

र्वेच घर दर। सर द्वर विस्ता अभ्य क्षेत्र कुर्य केंद्र विद्र र स्थ्रीनाय स्था क्षेत्र विषय विश्व केंद्र या अर्थे केंद्र विश्व केंद्र केंद्र विश्व केंद्र विश्व केंद्र विश्व केंद्र केंद्र विश्व केंद्र विश्व केंद्र विश्व केंद्र केंद्र विश्व केंद्र केंद्र विश्व केंद्र केंद्र

र्ट्व.क्व.श्रम.नरु.त